VAN VIHAR NEWSLETTER

चीकू

VAN VIHAR NATIONAL PARK & ZOO

OCT-NOV-DEC 2022

संदेश

वन विहार राष्ट्रीय उद्यान, मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल शहर के मध्य बड़ी झील के किनारे स्थित है, जिसे वर्ष 1983 में अधिसूचित किया गया था। वन विहार को केन्द्रीय चिड़ियाघर प्राधिकरण, नई दिल्ली द्वारा चिड़ियाघर के रूप में भी मान्यता दी गयी है ।

वन विहार प्रबंधन द्वारा जन मानस में पर्यावरण, वन एवं वन्यजीव संरक्षण के प्रति जागरूकता लाने के उद्देश्य से कई गतिविधियां जिनमें प्रमुख रूप से "एक दिवसीय वर्ड वाचिंग कैम्प", "नेचर कैम्प", "राज्य स्तरीय वन्यप्राणी सप्ताह " तथा विशेष दिनों पर "वल्चर डे", "अर्थ डे", "विश्व वन्यप्राणी दिवस" पर विशेष जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं।

वन विहार में वन्यप्राणी स्वास्थ्य प्रबंधन की बेहतर सुविधाएं उपलब्ध है जहां वन विहार के वन्यप्राणियों के साथ-साथ अन्य क्षेत्रों से रेस्क्यू कर लाये गये घायल वन्यप्राणियों का योग्य एवं अनुभव वन्यप्राणियों चिकित्सक द्वारा उपचार हेतु उत्कृष्ट सुविधा विकसित की है। वन्यप्राणियों को उपयुक्त पाये जाने पर उपचार उपरांत प्राकृतिक रहवास में छोड़ दिया जाता हैं।

वन विहार में वन्यप्राणियों हेतु रेस्क्यू सेंटर भी स्थापित किया गया है जहां सर्कस से जप्त वन्यप्राणी एवं विभिन्न क्षेत्रों से रेस्क्यू कर लाये वन्यप्राणियों को रखा जाकर उनका प्रबंधन किया जाता है। आम नागरिकों द्वारा वन विहार के प्रति विशेष आकर्षण है। यहां प्रतिवर्ष लगभग 06 से 07 लाख पर्यटक भ्रमण हेतु आते हैं।

वन विहार की त्रैमासिक गतिविधियों का समावेश कर न्यूज लेटर जारी किया जा रहा है, जो वन विहार प्रबंधन का सराहनीय प्रयास है।

(जसबीर सिंह चौहान)
(I.F.S.)
प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन्यप्राणी)

संचालक डेस्क

Van Vihar is a unique center and an example of how to amalgamate in-situ and ex-situ conservation. Located at the foot hills of Shyamala Hills and encircled by the Bhojtal of Bhopal, this picturesque landscape not only serves as an educational and recreational center for a Bhopalite, it is also the cultural center for central India. In one of the efforts to educate the public and as an awareness building activity the Van Vihar has come up with a quarterly news letter show causing various activities carried out by the Van Vihar.

In this publication, the wildlife week celebration, nature camps and anubhuti camps conducted at Van Vihar in the last quarter are highlighted. I hope the readers will be able to appreciate various efforts taken by our Van Vihar towards conservation of wildlife. Through this news letter we will also come up with know your animal and zoo keeper to educate the Van Vihar enthusiast about our animals and zoo keepers.

(Mrs. Padmapriya Balakrishnan)
(I.F.S.)
DIRECTOR, VAN VIHAR NATIONAL PARK

Address :
Director, Van Vihar National Park
and Zoo,Bhadbhada Road,
Bhopal – 462003
Phone : 0755 - 2674278
Email : fdvanvnp.bpl@mp.gov.in

Van Vihar is open to tourist on all days of the week except Friday.

@VanViharNationalParkOfficialPage
@vanviharnationalpark.bhopal
@van_vihar

Visit our website for park timings and gate charges.

www.vanviharnationalpark.org

उद्देश्य

(अ) मध्य भारत की लुप्तप्राय वन्य पशु प्रजातियों के नियोजित समन्वित संरक्षण प्रजनन के माध्यम से वन्यजीवों के संरक्षण में राष्ट्रीय प्रयासों के अनुरूप कार्य करना।

(ब) आगंतुकों के बीच जंगली जानवरों के लिए सहानुभूति विकसित करना और उन्हें वन्यजीवों के संरक्षण के कारण का समर्थन करने के लिए प्रेरित करना।

(स) आगंतुकों के बीच प्रकृति की जीवन सहायक प्रक्रियाओं के साथ पारिस्थितिक संबंधों के बारे में समझ विकसित करें और टिकाऊ जीवन शैली को अपनाकर और प्रकृति के साथ सद्भाव में रहकर उन्हें अक्षुण्ण बनाए रखना।

(द) इन-सीटू आबादी के लिए प्रबंधन कौशल प्राप्त करने और वन्यप्राणियों के प्राकृतिक आवास की रक्षा के लिए वकालत करने के उद्देश्य से सहयोगी अनुसंधान के माध्यम से वन्यजीवों के संरक्षण में चिड़ियाघरों की भूमिका को बढ़ाना।

(इ) अनाथ, जब्त, बचाए गए, घायल उम्रदराज वन्यप्राणियों को जो कि उनके प्राकृतिक आवास में छोड़े जाने में अनुपयुक्त हों, प्राप्त करना एवं उनके लिए एक बचाव केंद्र के रूप में कार्य करना।

लक्ष्यों का विवरण

(अ) वन विहार वन्यजीव संरक्षण एवं पशु कल्याण में कार्य करने वाली एक वैज्ञानिक संस्था बनने का लक्ष्य रखता है।

(ब) वन विहार एक प्रदूषण रहित एवं स्वस्थ माहोल बनाए रखने के लिए प्रभावी तकनीकी ज्ञान का एक केन्द बनने का लक्ष्य रखता है।

राज्य स्तरीय वन्यप्राणी सप्ताह 2022

दिनांक 01.10.2022 से दिनांक 07.10.2022 तक वन विहार राष्ट्रीय उद्यान-जू, भोपाल में राज्य स्तरी वन्यप्राणी सप्ताह 2020 का आयोजन किया गया। वन विहार स्थित विहार वीथिका में चित्रकला प्रतियोगिता, पक्षी अवलोकन एवं जैवविविधता शिविर, चीता के लिये दौड़, फोटोग्राफी प्रतियोगिता, रंगोली प्रतियोगिता, विद्यालयीन वाद-विवाद प्रतियोगिता, महाविद्यालयीन वाद-विवाद प्रतियोगिता, मेंहदी प्रतियोगिता, पॉम पेंटिंग प्रतियोगिता, जागरुकता हेतु सृजनात्मक कार्यशाला (स्कूली बच्चों हेतु आयोजित), फैन्सी ड्रेस प्रतियोगिता एवं फेस पेंटिंग प्रतियोगिताएँ संपन्न हुई। इन समस्त प्रतियोगिताओं में लगभग 58 शिक्षण संस्थाओं के 2217 प्रतिभागियों ने भाग लिया एवं विजेताओं को पुरूस्कृत किया गया।

नेचर कैम्प

नेचर कैम्प छायाचित्र

वन विहार राष्ट्रीय उद्यान-जू, भोपाल में छात्र-छात्राओं में वन, वन्यप्राणियों एवं पर्यावरण के प्रति जागरूकता तथा प्रकृति संरक्षण के प्रति संवेदनशीलता विकसित करने की दृष्टि से भोपाल शहर एवं उसके आस-पास के ग्रामों के शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के लिये दिनांकों दिनांक 29.11.2022, 06.12.2022, 13.12.2022, 17.12.2022 को नेचर कैम्प का आयोजन किया किया। नेचर कैम्प में लगभग 10 शिक्षण संस्थानों के लगभग 205 छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। पक्षी दर्शन, वन्यप्राणी दर्शन, प्रकृति पथ भ्रमण, स्थल पर विद्यमान वानिकी गतिविधियों की जानकारी, वन, वन्यप्राणी व पर्यावरण से संबंधित रोचक गतिविधियाँ कराई गई एवं जानकारी प्रदान कर उनकी जिज्ञासाओं को शांत किया गया। भ्रमण के दौरान प्रतिभागियों ने विभिन्न प्रजातियों का दर्शन किये जिसमें प्रमुख है इग्रेट, मेग पाई राबिन, ब्रोंज विंग जकाना, किंगफिशर, ग्रीन बी ईटर, टिटहरी, पोंड हेरोन, रेड मुनिया, विहिस्लिंग टील्सकार्मोरेंट, मूरहैन, ड्रोंगो, सिल्वर बिल मुनिया आदि। तितलियों में ग्रे पेनसी, कॉमन ईवनिंग ब्राउन, प्लेन टाईगर, कॉमन ग्रास यलो, ब्लू टाईगर, क्रीमसन रोज आदि को देखकर प्रतिभागी उत्साहित हो उठे। इसके अतिरिक्त बाघ, तेंदुआ, भालू, मगर, घड़ियाल, चीतल, सांभर, नीलगाय आदि वन्यप्राणियों का भी अवलोकन किया। इस दौरान संचालक वन विहार श्रीमती पदमप्रिया बालाकृष्णन एवं अन्य अधिकारी कर्मचारी भी उपस्थित रहे। कैम्प का संचालन सहायक संचालक वन विहार श्री सुनील कुमार सिन्हा द्वारा किया गया।

अनुभूति शिविर

वन विहार राष्ट्रीय उद्यान-जू, भोपाल में अनुभूति शिविर कार्यक्रम का आयोजन विभिन्न दिनांको 12.12.2022, 19.12.2022, 22.12.2022, 12.01.2023, 16.01.2023 व 23.01.2023 को किया गया। इस कार्यक्रम के माध्यम विद्यालयों के विद्यार्थियों अर्थात् भविष्य के नागरिकों को वन, वन्यप्राणी एवं पर्यावरण की अनुभूति कराकर, उन्हें उनके संरक्षण हेतु जागरूक एवं प्रेरित किया, विभाग एवं विभागीय अधिकारियों के कार्यो, उत्तरदायित्वों एवं चुनौतियों से विद्यार्थियों को अवगत कराया गया तथा माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा Mission LiFE "Lifestyle for Environment" के मूल मंत्रों से विद्यार्थियों को अवगत कराया गया। अनुभूति शिविर कार्यक्रम में लगभग 12 शिक्षण संस्थानों के लगभग 668 छात्र-छात्राओं एवं नागरिकों ने भाग लिया एवं विजेताओं को पुरूस्कृत किया गया। अनुभूति कार्यक्रम के मास्टर ट्रेनर के रूप में श्री ए.के.खरे, सेवानिवृत्त उप वन संरक्षक एवं पक्षीविद के रूप में मो. खालिक उपस्थित रहे। इस दौरान श्रीमती पदमप्रिया बालाकृष्णन, संचालक, वन विहार राष्ट्रीय उद्यान-जू, भोपाल एवं सहायक श्री एस.के. सिन्हा, संचालक वन विहार एवं अन्य अधिकारी कर्मचारी भी उपस्थित रहे।

रेस्क्यू वार्कशॉप 2022

वन विहार राष्ट्रीय उद्यान, भोपाल द्वारा भारतीय वन प्रबंध संस्थान में दिनांक 15 एवं 16 दिसम्बर 2022 को दो दिवसीय वन्यप्राणी रेस्क्यू स्क्वाड समीक्षा सह कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में अधिकारी उपस्थित रहे, अधिकारियों एवं समस्त रेस्क्यू स्क्वाड ने प्रेजेन्टेशन दिया। कार्यशाला में उपस्थित प्रेजेन्टेशन के माध्यम से विगत 2 वर्षों में उनके द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में किये गए वन्यप्राणी रेस्क्यू की जानकारी साझा की गई।

कार्यशाला की शुरूआत में संचालक वन विहार द्वारा कार्यशाला के उद्देश्यों के बारे में बताते हुए कार्यक्रम की रूपरेखा रखी।

श्री जे.एस. चौहान, प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन्यप्राणी) ने वर्तमान के परिपेक्ष्य में रेस्क्यू स्वायड की महत्ता एवं रेस्क्यू स्क्वाड के इस तरह के सम्मेलन की महत्ता पर प्रकाश डाला तथा आमंत्रित अतिथियों का स्वागत करते हुए वन्यप्राणी क्षेत्र में अनुसंधान की आवश्यकता के बारे में विस्तार से चर्चा की।

इसके बाद डॉ. मोहन राम ने गिर राष्ट्रीय उद्यान में वन्यप्राणी प्रबंधन एवं गुजरात के गिर जंगलों के वन्यप्राणियों के रेस्क्यू के बारे में भी बताया कि किस तरह से गिर लैंडस्केप में मानव-वन्यजीव संघर्ष, बचाव प्रतिक्रिया तंत्र और शमन ने वन्यप्राणियों का बचाव कार्य किया जाता है। तत्पश्चात डॉ. ए.बी. श्रीवास्तव ने रेस्क्यू के समय वन्यप्राणियों के हेडिलिंग के समय रखे जाने वाली सावधानियों के बारे में चर्चा की। इसके पश्चात पुन: डॉ. मोहन राम ने एक बार पुन: गिर राष्ट्रीय उद्यान एवं गुजरात में विभिन्न वन्यप्राणियों के ऊपर किए जा रहे अनुसंधान कार्य एवं तकनीकी के उपयोग से वन्यप्रणियों के प्रबंधन में एक बार पुन: चर्चा की।

इसके पश्चात एक-एक करके 17 रीजनल स्क्वाड के सदस्यों ने वर्ष-2021 से लेकर किए गए रेस्क्यू के कार्यो का विस्तृत वर्णन किया तथा चार डीविजनल रेस्क्यू स्क्वाड ने भी अपने कार्यो का विवरण प्रस्तुत किया और आपस में चर्चा की।

अंतिम सत्र में संचालक आई.आई.एफ.एम. द्वारा वन्यप्राणी प्रबंधन में आई.आई.एफ.एम. की भूमिका पर प्रकाश डाला एवं आई.आई.एफ.एम. द्वारा इस क्षेत्र में सम्पूर्ण सहयोग देने का वादा किया। इसके पश्चात प्रमाण पत्र वितरण के साथ कार्यशाला समाप्त हुई।

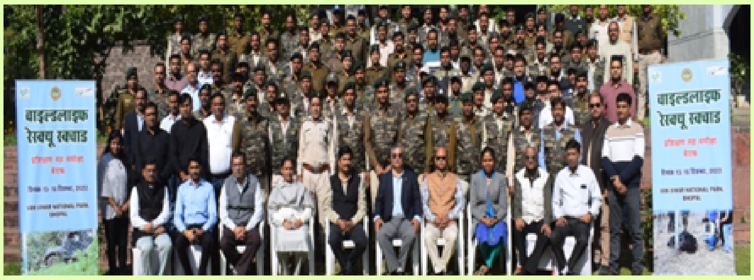

आई.एफ.एस. अधिकारियों का प्रशिक्षण दौरा

दिनांक 06.09.2022 को आई.आई.एफ.एम., भोपाल में मिड कैरियर ट्रैनिंग में आए भारतीय वन सेवा के अधिकारियों ने वन विहार का भ्रमण किया। भ्रमण के दौरान उन्हें वन विहार में हो रही गतिविधियों के बारे में बताया गया।

बाबा रामदेव के अनुयायी का दौरा

दिनांक 04.09.2022 को वन विहार में राज्य अतिथि आचार्य श्री बालकृष्ण के आगमन पर वन विहार भ्रमण कराया एवं उन्हें आवश्यक जानकारी प्रदान की, पर्यटन क्षेत्र का भ्रमण किया।

त्रैमास में महत्वपूर्ण रेस्क्यू कार्य

मौलाना आजाद राष्ट्रीय इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नॉलोजी (मैनिट), भोपाल में बाघ रेस्क्यू

दिनांक 02.10.2022 को मैनिट, भोपाल के छात्रों को संस्थान के परिसर में बाघ दिखाई दिया जिसकी सूचना मैनिट प्रबंधन ने वन विभाग को दी। सूचना मिलने पर भोपाल वन विभाग मंडल की टीम द्वारा मैनिट परिसर में सर्चिंग की गई। दिनांक 03.10.2022 को मैनिट परिसर में होस्टल नंबर आठ के पास ट्रैप कैमरा एवं दो ट्रैप कैज लगाए गए। दिनांक 05.10.2022 को सर्चिंग में बाघ द्वारा किया गया शिकार एवं बाघ के पगमार्क मिलने पर परिसर में बाघ होने की पुष्टि हुई। दिनांक 08.10.2022 को ट्रैप कैमरा में बाग की फोटो भी कैप्चर हो गई। दिनांक 09.10.2022 से 13.10.2022 के बीच बाघ की फोटो ट्रैप केज के पास लगे कैमरों में भी कैप्चर हुई। दिनांक 14.10.2022 को दो अतिरिक्त ट्रैप केज लगाए गए एवं मैनिट प्रबंधन से परिसर में घूम रहे मवेशियों को बाहर करने हेतु कहा गया जिससे कि बाघ को शिकार न मिले एवं पिंजड़े में लालच हेतु बांधे गए शिकार को खाने हेतु ट्रैप केज में फंस जाए। दिनांक 16.10.2022 को सुबह उक्त भाग ट्रैप केज में बंद हो गया जिसके बाद बाघ को बेहोश कर स्वास्थ्य परीक्षण किया गया एवं रेडियो कॉलर डालकर सतपुड़ा टाइगर रिजर्व छोड़ने हेतु भेज दिया गया।

पक्षी सर्वेक्षण

वन विहार राष्ट्रीय उद्यान, भोपाल में पक्षी सर्वेक्षण का कार्य गैर शासकीय संस्था ‘‘भोपाल बर्ड’’ को सहयोग से माह नवम्बर और दिसम्बर 2022 में जब प्रवासी पक्षियों का आगमन शुरू होता है उस समय किया गया। इस सर्वे कार्य में 32 स्वयंसेवकों ने भाग लिया तथा सर्वे का कार्य दो विधियों-

(1) पाईन्ट काउण्ट मेथड

(2) डायरेक्ट काउण्ट मेथड से किया गया। इस सर्वेक्षण का मुख्य उद्देश्य निम्नानुसार हैः-

(अ) राष्ट्रीय उद्यान में पक्षियों का बेसलाईन डेटा, चेकलिस्ट तैयार करना।

(ब) राष्ट्रीय उद्यान में पाई जाने वाली आर.ई.टी. प्रजातियों के बारे में जानना।

(स) राष्ट्रीय उद्यान में पक्षियों के संरक्षण की रणनीति तैयार करने में मदद करना।

इन सर्वेक्षणों से निम्न परिणाम प्राप्त हुएः-

(1) 52 फैमिली के 175 प्रजातियों के पक्षी रिकॉर्ड किए गए।

(2) पक्षियों की कुल संख्या 2657 पायी गयी।

(3)आई.यू.सी.एन. कैटेगरी के अनुसार 6 थ्रेटेन्ड प्रजातियाँ मिली।

(4) सबसे अधिक पक्षियों की संख्या ‘‘लिटिल कार्मोरेंट’’ की रही जो कि 220 थी।

(5) राष्ट्रीय उद्यान के अंदर पहली बार ‘‘गे हेडेड फीसिंग ईगल’’ देखा गया।

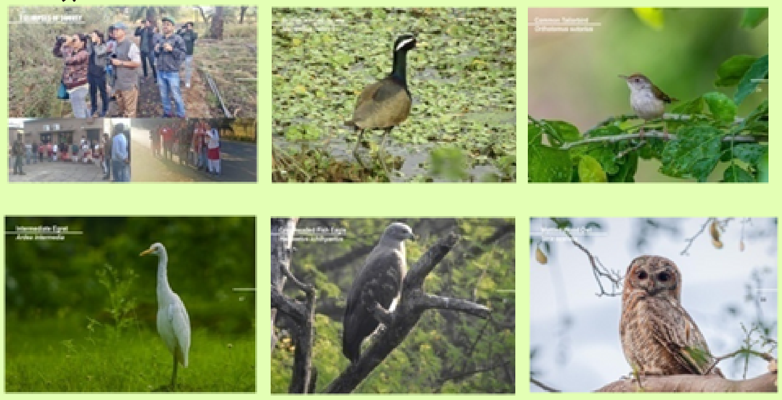

तितली सर्वेक्षण

विन विहार राष्ट्रीय उद्यान, भोपाल में तितली सर्वेक्षण का कार्य गैर शासकीय संस्था ‘‘भोपाल बर्ड’’ को सहयोग से नवम्बर माह में दिनांक 08, 19, 26 तथा दिसम्बर माह में दिनांक 03, 17, 24 को किया गया। इस सर्वेक्षण में 32 स्वयंसेवकों ने भाग लिया तथा सर्वे का कार्य ट्रांजेक्ट या पोलार्ड वाक विधि से किया गया। इसके साथ-साथ इस सर्वेक्षण में नेक्टर प्लान्ट एवं होस्ट प्लान्ट का बेसलाईन सर्वे भी किया गया।

इस सर्वेक्षण से निम्न परिणाम प्राप्त हुएः-

(1) 6 फैमिली के 63 प्रजातियों के तितली सर्वेक्षण के दौरान रिकॉर्ड किए गए।

(2) सर्वेक्षण के दौरान तितलियों की कुल संख्या 1656 पायी गयी।

(3) सबसे अधिक तितलियों की संख्या ‘‘कॉमन ग्रास यलो’’ की रही जो कि 130 थी।

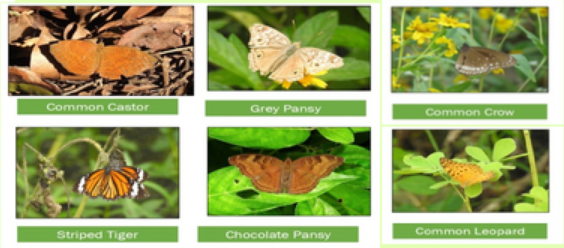

वनस्पतियों का सर्वेक्षण

विन विहार राष्ट्रीय उद्यान, भोपाल वनस्पतियों का सर्वेक्षण का कार्य दिनांक 22.11.2022 को किया गया। इसके पूर्व दिनांक 21.11.2022 को वनस्पति का सर्वेक्षण का प्रशिक्षण देने हेतु दो विशेषज्ञों डॉ. हिलेन्द्र आर. राम व डॉ. सुदेश बाघमारे की उपस्थिति में एक प्रशिक्षण सह कार्यशाला की गई तथा दिनांक 28, 29 व 30.11.2022 को वनस्पतियों के सर्वेक्षण का कार्य किया गया जिसमें 19 प्रजाति के वृक्ष, 3 प्रजाति की बेलाएँ, 23 प्रजाति के झाड़ियाँ एवं 38 प्रजाति की घाँस एवं खरपतवार चिहिन्त हुई।

वन्यप्राणी आगमन

वन विहार राष्ट्रीय उद्यान, भोपाल में जिला इन्दौर से दिनांक 05.11.2022 को एक मादा लॉयन (गंगा) कमला नेहरू प्राणी संग्रहालय, इन्दौर से लायी गई थी।

वन विहार राष्ट्रीय उद्यान, भोपाल में त्रैमासिक में पर्यटकों का आगमन

वन विहार राष्ट्रीय उद्यान, भोपाल में माहवार भ्रमण के लिए आए पर्यटकों की जानकारीः-

माह	पर्यटक संख्या	प्राप्त राशि
अक्टूबर 2022	64804	26,51,820/-
नवम्बर 2022	70493	28,57,670/-
दिसम्बर 2022	97216	38,71,220/-

वनरक्षक प्रशिक्षाणर्थियों और अधिकारियों का दौरा

दिनांक 26.10.2022 को जिला शिवपुरी (वन विद्यालय) से कुल 35 प्रशिक्षाणार्थी वन विहार राष्ट्रीय उद्यान, भोपाल में भ्रमण पर आए थे जिसमें से 29 पुरूष व 6 महिला थीं।

मैनेजमेंट इफेक्टिवनेस इवेलूवेशन टीम का वन विहार दौरा

दिनांक 19 व 20 नवम्बर 2022 को 3 सदस्यीय एम.ई.ई. टीम ने वन विहार राष्ट्रीय उद्यान, भोपाल का दौरा कर यहाँ हो रहे कार्यो का मूल्यांकन किया। टीम के सदस्यों का नाम निम्नानुसार है:-

1. डॉ. टी.एस. इशा, केरला फॉरेस्ट रिचर्स इंस्टीट्युट के पूर्व वैज्ञानिक
2. श्रीमती श्रुति शर्मा आई.एफ.एस. पूर्व वन बल प्रमुख, वन विभाग राजस्थान
3. डॉ. अभिषेक भट्टनागर, डब्ल्यू.डब्ल्यू.एफ. इण्डिया

आईए वन विहार राष्ट्रीय उद्यान, भोपाल के वन्यप्राणियों के बारे में जानें

बिल्लियाँ

वन विहार राष्ट्रीय उद्यान, भोपाल में तीन प्रकार की भारतीय बिल्लियाँ हैः-

- प्रजातियों की संख्या - 36 (वन वि.रा.उ में 3)
- सर्वाधिक बड़ा - बाघ
- सर्वाधिक छोटा - बदरंग चित्रित माजार
- सर्वाधिक बहुतायत - जंगली बिल्ली (वन बिलाव)
- सर्वाधिक संकटापन्न - सिंह (एशिया का बब्बर शेर)

बिल्लियों का विकास लगभग 400 वर्ष पूर्व हुआ। आज जो 36 प्रकार की प्रजातियाँ संसार में पाई जाती हैं। कुत्तों की तरह भागकर शिकार करने के विपरीत बहुत सी बिल्लियाँ चोरी-छिपे शिकार करती हैं। पारम्परिक रूप से शेर, चीता, बब्बर शेर तथा तेन्दुआ आदि बड़ी बिल्लियों की प्रजातियाँ कहलाती हैं। इनमें चीता केवल ऐसी बड़ी बिल्ली है जो कि 20वीं शताब्दी में भारत से लुप्त हो गई है तथा वर्ष-2022 में कूनो राष्ट्रीय उद्यान में पुनः लाकर बसाया गया। आज 350 से अधिक शेर गुजरात के छोटे से स्थान पर पाए जाते हैं और उनकी संख्या और भी बढ़ रही है।

सिंह (बब्बर शेर)

बब्बर शेर एक बड़ी पिंगल बिल्ली होती है जिसके शरीर पर कोई आकृति नहीं होती। उसकी लंबी पूछ होती है जिसके अंत पर बालों का गुच्छा होता है। एशिया के नर शेर यानी बब्बर शेर का मुंह के आस-पास विशेष अयाल होता है जिनमें रंगों की विभिन्नता होती है - यह हल्का सुनहरे रंग से गहरे काले रंग के होते हैं। इसका आयल अफ्रीकन शेर के अनुपात में बिरला ही है इसलिए इसके कान अधिक स्पष्ट रूप से दिखाई दे जाते हैं। शेरनी पर ऐसा कोई अयाल नहीं पाया जाता परंतु इसके शरीर पर हल्की-हल्की (चितकबरी) धब्बों जैसी आकृतियां होती हैं और जैसे वे बड़े होते जाते हैं यह हल्की पड़ती जाती हैं। दोनों नर-मादा में पेट पर एक विशेष प्रकार का मांस होता है 1,00,000 वर्ष पहले यह शेर अपनी प्रजातियों से अलग हो गया और लगभग 100 वर्ष पहले तो इनकी संख्या लगभग 20 तक गिर गई थी। भारतीय गेंडे की तरह शेर का भी बचाव हुआ है और इनकी संख्या धीरे-धीरे बढ़ रही है।

- व्यवहार : अफ्रीकन शेर से भारत का बब्बर शेर कम सामाजिक है। यह अपने संगठन में 2 से 5 मादाओं व शावकों के साथ रहता है। नर केवल खाने या प्रजनन के लिए आते हैं। यह ज्यादातर पालतू पशुओं का शिकार करते हैं - पहले वर्ष 1970-80 में यह गांव की गाय भैंस का शिकार करते थे और उसके बाद यह अधिकांश जंगली पशुओं से पेट भर लेते हैं।
- आकार : पूरे शरीर की लंबाई 2.75 मीटर; बाहर 110 से 190 किलोग्राम
- प्राकृतावास : सूखे पतझड़ के पत्तों के बीच, खुरदरे जंगल, सूखे घास के जंगल
- सर्वोत्तम अवलोकन : केवल गुजरात में दिखाई देता है
- संरक्षण संकट : आवास की कमी व बीमारी व आगे नस्ल न बढ़ना
- वन विहार राष्ट्रीय उद्यान, भोपाल में वर्तमान में 3 सिंह है:-

(1) सत्या (नर) उम्र 8 वर्ष

(2) नंदी (मादा) उम्र 8 वर्ष

(3) गंगा (मादा) उम्र 3 वर्ष

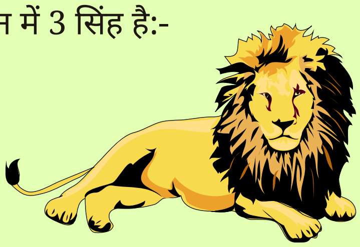

वन विहार राष्ट्रीय उद्यान-जू के - जू-कीपर

नाम- श्री शर्मानन्द गैरे
पद-वनरक्षक

श्री शर्मानन्द गैरे, वनरक्षक वर्ष-2009 से वन्यप्राणी तेन्दुआ/टाईगर के बाड़े में कार्य रहे हैं। वन्यप्राणियों को खाना डलवाना एवं देख-रेख करना इनका काम है। श्री शर्मानन्द गैरे के अनुसार वन्यप्राणी तेन्दुआ को यहाँ 3 से 4 किलोग्राम माँस भोजन के रूप में दिया जाता है जबकि बाघ को 9 से 10 किलोग्राम माँस भोजन के रूप में दिया जाता है। गर्मी के मौसम में वन्यप्राणी कम खाना खाते हैं एवं ठण्ड के मौसम में ज्यादा खाना खाते हैं। वन्यप्राणी ठण्ड के मौसम में ज्यादा एक्टीव होते हैं। गर्मी के मौसम में सुस्त रहते हैं। वन्यप्राणी तेन्दुआ एवं टाईगर की उम्र लगभग 17 से 18 वर्ष तक रहती है। इनकी प्रजनन अवधि लगभग 99 से 102 दिन रहती है। वन्यप्राणी 02 से 03 वर्ष में शावक देने के योग्य रहता है। वर्तमान में गैरे जी की देख-रेख में 11 तेन्दुएँ हैं इनमें से ज्यादातर वन्यप्राणी रेस्क्यू कर लाए गए हैं। इनमें से एक माँ से बिछड़ा हुआ शावक हैं। वन्यप्राणी चिकित्सक के निर्देशानुसार प्रतिदिन दवाईयों को खिलाने का कार्य किया जाता है। इसके अतिरिक्त वन्यप्राणियों की गतिविधियों पर प्रतिदिन नजर रखकर उनका रिकॉर्ड मेन्टेन किया जाता है। बाड़े प्रभारी के रूप में वन्यप्राणी चिकित्सक के प्रतिदिनि निरीक्षण के समय उपस्थित रहकर उनकी मदद करना एवं घायल वन्यप्राणी की स्थिति में उसकी चिकित्सा में मदद करना इनका प्रमुख कार्य है।

वन विहार के वन्यप्राणी तेन्दुओं के नाम:-

(1) रामू (नर), (2) जबलपुरीया (नर), (3) वानो (मादा) (4) मनी (मादा), (5) इन्दर (नर), (6) पेंच (मादा), (7) इन्दौरी (मादा), (8) बाली (मादा), (9) ग्वालियर (मादा), (10) पेन्थर शावक (नर), (11) इन्दौर वार्ड।

नाम - श्री दिनेश इरपाचे
पद - स्थाई कर्मी

श्री दिनेश इरपाचे, स्थाई कर्मी वर्ष-1985 से कार्यरत हैं। वर्तमान में इनकी ड्यूटी का इकाई सफारी के अंतर्गत तेंदुआ हाउसिंग में है। इनके द्वारा तेंदुआ हाउसिंग में रखे गए माँसाहारी वन्यप्राणियों की देख-रेख का कार्य कुशलतापूर्वक किया जाता है एवं वन्यप्राणियों की हाउसिंग की साफ-सफाई तथा कीटनाशक लायजाल से धुलाई आदि कार्य भी विशेष ध्यान रखते हुए कराया जाता है। इसके अतिरिक्त पूर्व में भी इनकी ड्यूटी इकाई सफारी के अंतर्गत भालू बाड़ा, टाइगर बाड़ा एवं लॉयन बाड़ा में भी लगाई गई है। उक्त बाड़ा हाउसिंगों में भी इनके द्वारा वन्यप्राणियों की उचित देख-रेख साफ सफाई कार्य का कुशलतापूर्वक ध्यान दिया गया। आप जू-कीपर के रूप में वन विहार में वन्यप्राणियों की देख-रेख में निम्नलिखित कार्य करते हैं:-

(1) प्रतिदिन बाड़े एवं हाउसिंग की साफ-सफाई, धुलाई कार्य।
(2) 15 दिवस में एक बार बाड़े के जल स्त्रोत की सफाई एवं चूने से पुताई का कार्य।
(3) माह में एक बार सम्पूर्ण बाड़े की फ्लेम की सहायता से फ्यूमीगेशन से कीटाणु रहित करने का कार्य किया जाता है।
(4) नालियों में फार्मेलिडहाइड डाला जाता है।
(5) हाउसिंग के चारों ओर एक फुट चौड़ी चूने की पट्टी डालकर टिक्स् रोधी कार्य किया जाता है।

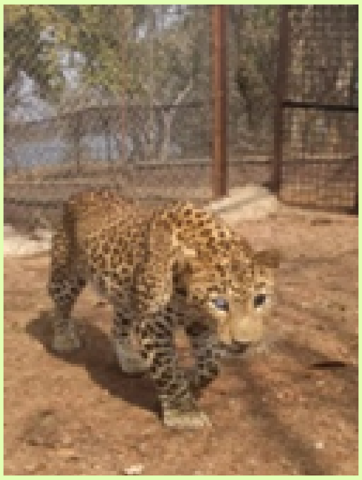

वन्यप्राणी अंगीकृत करें

वन विहार के वन्यप्राणियों को किसी भी व्यक्ति अथवा संस्था द्वारा, मासिक, त्रैमासिक, छ:माही या वर्ष भर के लिए गोद लिया जा सकता है। वन्यप्राणी अंगीकरण योजना के अंतर्गत व्यय की गई राशि 80G के अंतर्गत नियमानुसार आयकर से मुक्त होगी। निम्न वन्यप्राणियों को उनके समक्ष दर्शित राशि, Executive Director M.P. Tiger Foundation Society, Van Vihar National Park, Bhopal के नाम पर चैक जारी कर गोद लिया जा सकता है:-

प्रजाति	वार्षिक राशि रू	अर्द्धवार्षिक राशि रू	त्रैमासिक राशि रू	मासिक राशि रू
बाघ	2,00,000	1,00,000	50,000	17,000
सिंह	2,00,000	1,00,000	50,000	17,000
तेन्दुआ	1,00,000	50,000	25,000	9,000
भालू	1,00,000	50,000	25,000	9,000
लकड़बग्गा	36,000	19,000	10,000	4,000
जैकाल	30,000	16,000	9,000	3,500
मगर	36,000	19,000	10,000	4,000
घड़ियाल	50,000	26,000	14,000	5,000
अजगर	8,000	4,500	2,300	800